REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 13 | ISSUE - 7 | APRIL - 2024

# उत्तर भारत में आर्य समाज का विकास एवं लोकप्रियता : हरियाणा के विशेष सन्दर्भ में

**Monika Saini**
**Ph.D Research Scholar,**
**Department of History and Archaeology,**
**Maharshi Dayanand University, Rohtak.**

## सारांश

आर्यसमाज की स्थापना का मुख्य उद्देश्य था-वैदिक धर्म का शुद्ध रूप से पुनरूत्थान करना। भारत को सामाजिक , धार्मिक तथा राजनैतिक रूप से एकसूत्र में बांधना तथा भारत पर जो पाश्चात्य प्रभाव थे , उन्हें दूर करना महर्षि दयानन्द सरस्वती का यह भी स्पष्ट मानना था कि भारत विश्व का सबसे श्रेष्ठ देश है , जो कभी विश्व गुरु की श्रेष्ठतम भूमिका लिये ख्याति प्राप्त था। वैदिक धर्म के सत्य सनातन धर्म के विशुद्ध रूप को अपनाकर यह देश विश्व का एक बार फिर नेतृत्व कर सकता है। 19वी शताब्दी में ब्रहम समाज, प्रार्थना समाज जैसे सुधार आन्दोलनों का क्षेत्र काफी सीमित था और वे जनसमुदाय के थोडे से वर्ग को ही प्रभावित कर सके। किन्तु इसके विपरीत आर्यसमाज शीघ्र ही एक जनांदोलन के रूप में उभरा और भारत के लगभग सभी प्रान्तों के अतिरिक्त विदेशों में भी यह काफी लोकप्रिय रहा। आर्यसमाज का प्रभाव जनता के विभिन्न वर्गों पर समान रूप से था। शिक्षा के प्रसार , कुरीतियों के निवारण, सामाजिक न्याय, दलितोद्धार, स्त्री शिक्षा, स्वदेशी, राष्ट्रीयता के विकास , पाखण्ड के खण्डन , रूढ़ियों के निराकरण और अपनी संस्कृति के प्रति गौरव की अनुभूति के प्रति जो सफल कार्य गत् 100 वर्षों में किये गये वे किसी अन्य समाज सुधार आन्दोलनों की तुलना में अधिक हैं।

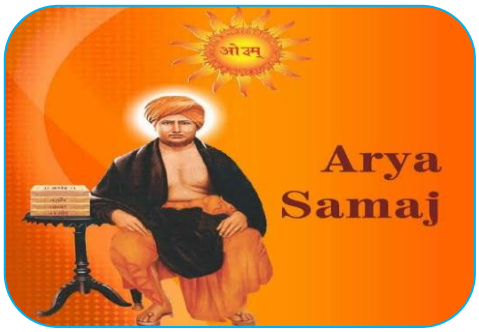


**बीज शब्द :** आर्यसमाज, सामाजिक, धार्मिक, समाज, प्रार्थना समाज, आन्दोलन, कुरीति, जनसमुदाय, स्वदेशी, राष्ट्रीयता, संस्कृति।

## परिचय :

**1880** के दशक के दौरान , राय साहिब संसार चंद द्वारा रोहतक में आर्य समाज की एक शाखा स्थापित की गई , जो रोहतक के सांघी , महम, झज्जर, महरा और किलोई गांवों में आर्य समाज को फैलाने में सफल रहे। पड़ोसी राजस्थान और के साथ सांस्कृतिक संबंध बीकानेर क्षेत्र से जाटों के प्रवास ने 1890 के दशक में हिसार-रोहतक इलाकों में आर्य समाज के प्रचार

में भी योगदान दिया। आर्य समाज की स्थापना का इस क्षेत्र में बहुत प्रभाव पड़ा। धर्मान्तरित लोगों के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ना , संध्या करना , हवन और उपदेश में भाग लेना , भजन गाना और गोरक्षा में रुचि विकसित करना आम बात थी। छज्जूराम ने भिवानी में गौशाला स्थापित की और रोहतक के नवल सिंह ने हरिद्वार में गौशाला खोली। इन पहलों के परिणामस्वरूप , हरियाणा में एक प्रभावी गौ-रक्षा आंदोलन का मार्ग प्रशस्त हुआ। आर्य समाज द्वारा करेवा (विधवा पुनर्विवाह) की स्वीकृति सै शिक्षित जाटों को इस संगठन का अनुसरण करने में सर्विधा हुई।

## उत्तर भारत में आर्य समाज की व्यवस्था

भारत पुरातन काल से अपनी शांतिप्रियता के लिये विश्व विख्यात रहा है। दीर्घकालीन भारतीय संस्कृति एवं मनीषी चिन्तन की परम्परा में सत्य और अहिंसा मूल केन्द्रीय तत्व के रूप में प्रतिष्ठित रहे हैं। जो आज भी हमारी परम्पराओं में शामिल है। किन्तु एक विशेष कालखण्ड ने इसके दुष्परिणामों को भी झेला और भारत विदेशी , बर्बर तथा असभ्य शासको , यवनो, पल्लवों, हूणों के आक्रमण का प्रतिकार करने में असफल रहा। (शर्मा एल. पी., आधुनिक भारत, आगरा,1971, पृष्ठ 329) आर्य अमज की स्थापना बम्बई में हुई , लेकिन यह हरियाणा में बहुत लोकप्रिय हुआ , जो उस समय पंजाब का हिस्सा था और बाद में पूरे उत्तर भारत में दूर-दूर तक फैल गया। महर्षि दयानंद सरस्वती 1880 में आए। अंधविश्वास और अशिक्षा के खिलाफ प्रचार करने के लिए वे कुछ समय तक रेवाड़ी में रहे। उन्होंने पहले रेवाडी और बाद में रोहतक में भी आर्य समाज की एक शाखा स्थापित की। आर्य समाज ने हरियाणा के कृषक समुदाय विशेषकर जाटों के पिछड़ेपन को दूर करने में महान भूमिका निभाई। इसे जाट समुदाय से भी व्यापक स्वीकृति मिली क्योंकि आर्य समाज ने जाति व्यवस्था की आलोचना की थी , इसलिए ऊंची जाति के हिंदुओं द्वारा उन्हें पिछड़ा माना जाता था।

आज हम हरियाणा के लगभग हर शहर में आर्य समाज मंदिरों और शैक्षणिक संस्थानों को फलते-फूलते देख सकते हैं। लाला लाजपत राय ने हरियाणा के ग्रामीण इलाकों में आर्य समाज को लोकप्रिय बनाने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। चौधरी मातू राम और उनके उत्तराधिकारी शिक्षा प्रदान करने के प्रति बहुत उत्सुक थे और उन्होंने लड़कों और लड़कियों दोनों के लिए स्कूलों और कॉलेजों का एक नेटवर्क बिछाया।

आर्य समाज ने हरियाणा के कृषक समुदाय विशेषकर जाटों के पिछड़ेपन को दूर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जाटों के बीच आर्य समाज की सफलता महर्षि दयानंद की ब्राह्मणों से शत्रुता के कारण थी। आर्य समाज में शामिल होने वाले पहले जाट हिसार और रोहतक के जाट थे। आर्य समाज में परिवर्तित होने वाले पहले जाटों में से एक रामजी लाल हुडा थे। लाला राजपत राय ने उन्हें आर्य समाज का पहला जाट प्रवक्ता कहा। उन्होंने अपने समुदाय के बड़ी संख्या में सदस्यों के बीच अपना धर्म फैलाया। उन्होंने अपने साथियों के बीच आर्य समाज की विचारधारा को फैलाने के लिए जाट सभाओं और महासभाओं का आयोजन किया। 1921 में वे हिसार में आर्य समाज के अध्यक्ष बने और शुद्धि सभा के विकास में योगदान दिया।

इन संगठनों का उद्देश्य उन लोगों को वैदिक धर्म में वापस लाना था, जो बहुत पहले इस्लाम या ईसाई धर्म में परिवर्तित हो गए थे। 1923 में वे हिसार और रोहतक जिलों में शुद्धि सभा के अध्यक्ष बने। लेकिन , वास्तव में, इन सभाओं ने कई जाटों और निचली जातियों को शुद्ध किया, भले ही वे हिंदू थे ताकि उन्हें द्विज या दो बार जन्मे में बदल दिया जा सके। (आर्य , कृष्ण सिंह व शास्त्री, पृष्ठ 11)

## आर्य समाज से पूर्व अन्य समाज सुधार आन्दोलन

### ब्रह्म समाज

25 अगस्त 1828 कलकत्ता में राजा राममोहन राय ने ब्रह्म समाज की स्थापना की। राजा राममोहन राय का जन्म 1772 में एक कुलीन ब्राह्मण परिवार में हुआ था। शीघ्र ही ब्रह्म समाज की शाखाएँ भारत के विभिन्न हिस्सों में स्थापित हो गयी और इसके सदस्यों की संख्या में वृद्धि हो गयी। मानवतावाद ब्रह्म समाज का आदर्श था। ब्रह्मवाद , एकेश्वरवाद ब्रह्मसमाज का लक्ष्य था।

### प्रार्थना समाज

भारतीय समुदाय के लिये सहयोग , राष्ट्रीय एकता, सामंजस्य, व्यक्तिगत, स्वतंचता जैसे नए सिद्धान्तों की घोषणा करतो भारत में नए जीवन का संचार करने में ब्रद्धा समाज का महत्वपूर्ण योगदान है। यह प्रथम संगठित अभिव्यक्ति थी जिसमें राष्ट्रीय जागरण की झलक दिखागी दी। ब्रहा समाज के दिखाए गये मार्ग के अनुरूप ही महाराष्ट्र में 1867 में प्रार्थना समाज की स्थापना हुई। प्रार्थना समाज के स्वरूप को जीवंत रूप दिया महादेव गोविन्द रानाड़े तथा आत्माराम पांडुरंग ने। इनके द्वारा स्थापित समाज का मुख्य उदेश्य सुधार की प्रवृत्तियों का संचालन करना था। दक्षिण शिक्षा समिति , विधवा विवाह संघ और दलित उद्धार मिशन महाराष्ट्र में प्रार्थना समाज द्वारा स्थापित किये गये। ब्रद्धा समाज ने बंगाल में तथा प्रार्थना समाज ने महाराष्ट्र में लगभग एक ही कार्य किया। कुछ समय पश्चात रानाडे ने "ऑल इण्डिया र कांन्फ्रेंस की स्थापना की जिसके द्वारा समाज सुधार के कार्य को एक नवीन ऊर्जा प्राप्त हुई।

### अलीगढ़ आन्दोलन

सर सैग्मद अहमत खाँ ने मुसलमानो के लिये नहीं कार्य किया जिसकी परिणती राजा राम मोहन राय के द्वारा हिन्दू समाज में सुधार कार्य के लिये हुई थी। अहमद खां का विचार था कि भारतीयों की अवनति का सबसे बड़ा कारण है कि उन्होंने अपने आपको पाश्चात्य सभ्यता तथा संस्कृति से अलग रखा और ब्रिटिश लोगों के साथ उनके सम्बन्ध का अच्छा न होना। इन सबको दृष्टिगत करते हुए सर सैय्यद अहमद खां ने अपने जीवन के दो मुख्य लक्ष्य बनाऐ एक तो अंग्रेजोतथा मुसलमानी के मध्य सम्बन्धों को ठीक करना और दूसरा मुसलमानों में अंग्रेजी शिक्षा का प्रसार करना।

इस प्रकार उन्होंने भारतीय मुसलमानों में इस बात का प्रचार किया कि उनकी हालत तभी सुधर सकती है , जब वे अंग्रेजो के साथ अपने सम्बन्धी को ठीक करें और उनके प्रति वफादार रहें। ब्रिटिश अफसरों के सामने उन्होंने मुसलमानों का प्रतिनिधित्व इस बात को रखा कि अगर ब्रिटिश शासन मुसलमानों के साथ थोड़ी सी सहानुभूति दिखाएँ तो ये ब्रिटिश शासन के प्रति वफादार है क्योंकि हृदय से ब्रिटिश शासन के खिलाफ नहीं है। सर सैय्यद अहमद खां के इस कार्य को शीघ्र ही सफलता मिल गयी क्योंकि हिन्दुओं की बढ़ती हुई सामाजिक चेतना से अंग्रेज शंकित होने लगे थे। (चिंतामणि , सी. वाई., इण्डिया पॉलिटिक्स सींस द म्यूटिनी –।।,1939, पृष्ठ 28)

## हरियाणा में आर्य समाज का विकास एवं लोकप्रियता

1880 के दशक से, आर्य समाज की स्थापना हुई जाटों के बीच अपने निर्वाचन क्षेत्र का विस्तार करने के लिए नए संघों और संगठनों ने उन्हें एक समर्पित और आत्म-नियंत्रित योद्धा जाति के रूप में और केवल एक शक्तिशाली देशवासी के रूप में

अपनी पहचान मजबूत करने में मदद की। दयानंद सरस्वती ने 1879 में पहली बार दक्षिण-पश्चिम पंजाब (यानी हरियाणा) का दौरा किया जब वे अंधविश्वास और अशिक्षा के खिलाफ प्रचार करने के लिए अंबाला और रेवाड़ी गए। हरियाणा में लाला लाजपत राय, पंडित लखपाल राय, लाला चुरा मणि, हीरा लाल और चंदू लाल उनके अनुयायी बन गए। 1880 के दशक के दौरान, उन्होंने विशेषकर हिसार में जाटों के बीच अपनी गतिविधियाँ तेज़ कर दीं , जहाँ लाला लाजपत राय वकालत करते थे। कुछ समय बाद आर्य समाज का संदेश अन्य जिलों-अम्बाला , करनाल और गुड़गांव तक फैल गया। (विद्यालंकार सत्यकेतु, स्वामी श्रद्धानंद, दिल्ली, पृष्ठ 8)

7 अप्रैल, 1875 को बम्बई में महर्षि दयानंद सरस्वती ( 1824- 43) द्वारा स्थापित आर्य समाज ने हरियाणा के इतिहास में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसने सामाजिक मुद्दों को उठाया और बाल विवाह और महिलाओं को असमान स्थिति में रखने के खिलाफ संघर्ष किया। इसने अंतरजातीय विवाह और विधवाओं के पुनर्विवाह का प्रचार किया। इसने राष्ट्रीय आपदाओं के दौरान बहुमूल्य योगदान दिया। आर्य समाज के नेता शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी थे। यद्यपि आर्य समाज ने कृषि समुदायों की सामाजिक-धार्मिक स्थिति को बढ़ाने, शिक्षा का प्रसार, अस्पृश्यता को दूर करने और महिलाओं की सामाजिक स्थिति को बढ़ाने के लिए दृढ़ प्रयास किए। इसने बाल विवाह और कन्या भ्रूण हत्या जैसी सामाजिक बुराइयों के खिलाफ भी अभियान चलाया। बीसवीं सदी की शुरुआत के साथ आर्य समाज हरियाणा में कृषि विकास के लिए एक महत्वपूर्ण शक्ति के रूप में उभरा।

आर्य समाज का उद्देश्य इस संसार को महान बनाना था। आर्य शब्द का अर्थ है एक महान इंसान - जो विचारशील और दानशील है, जो विचारों और कार्यों में अच्छा है वह आर्य है। इस आंदोलन का लोगों विशेषकर हिंदुओं के जीवन और सोच पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। यह स्वरूप में पुनरुत्थानवादी और विषयवस्तु में सुधारवादी आंदोलन था। इसने अपनी प्रेरणा वेदों से ली, जिन्हें अचूक और सभी ज्ञान का स्रोत माना जाता था। इस प्रकार, स्वामी दयानंद ने हिंदू धर्म को अज्ञानी पुजारी की पकड़ से मुक्त सुधार करने का प्रयास किया वेदों की और वापस जाने का आह्वान किया। आधिकारिक दृष्टिकोण के यह एक हिंदू सुधारित चर्च था जो ईसाई धर्म , पश्चिर और पश्चिमी प्रभुत्व के खिलाफ हिंदू धर्म की प्रति। प्रतिनिधित्व करता था। (दुबे लक्ष्मीनारायण, हिन्दी साहित्य में आर्य समाज की अभिव्यक्ति, पृष्ठ 72)

## सामाजिक स्थिति

आर्यसमाज के उद्भव से पूर्व भारतीय राजनीतिक रूप से तो ब्रितानिया हुकुमत के पूर्णतः अधीन हो चुके थे वरन् उनकी सामाजिक स्थिति भी डावांडोल हो चुकी थी। सामाजिक क्रियाशीलता में रूढ़िवादिता ने अपना स्थान बना लिया था। पूर्व मध्यकाल से ही हिन्दू समाज पतन की ओर अग्रसर था। 'आत्मवत् सर्वभूतेषु की भावना भारतीयों में रामाप्त हो चुकी थी और समाज जातियों और उपजातियों में विभाजित हो चुका था। अंधविश्वास और अज्ञानता समाज पर पूर्ण रूप से छाए हुए थे तथा समाज क्रियाशीलता में बाधक थे। तत्कालीन स्थिति में समाज के सभी धार्मिक कर्मकाण्डो , शादी समारोह में अंधविश्वास का बोलबाला था। वैज्ञानिक सोच का कही भी कोई सरोकार नहीं था। ज्योतिष विद्या का थोड़ा सा ज्ञान रखने वाले व्यक्ति का समाज में विशेष स्थान था। समाज में होने वाले हर अवसर पर उसकी उपस्थिति आवश्यक थी। श्रद्ध के अवसर पर उसको श्रद्धापूर्वक भोजन कराया जाता था ताकि यजमान के पुरखो को दूसरे लोक में कष्टी का भाजन न बनाना पड़े।

समाज के प्रत्येक वर्ग का अपना कुलगुरू तथा धार्मिक ग्रन्थ होता था। माथे पर अलग-अलग प्रकार के चिन्ह लगाने से व्यक्ति की पहचान निर्धारित होती थी। धर्म से सम्बन्धित ग्रन्थों को पवित्र माना जाता था, जो कुछ भी इन ग्रंथो में लिखा होता था, वही उनका धर्म होता था।" प्रिटिंग प्रेस तो उस समय थी नहीं , चतुर पडित हस्त लिखित ग्रंथो में अपने स्वार्थ की सिद्धि के लिये

जो चाहते जोड देते। इस प्रकार तथाकथित पंडित वर्ग ने मूल शास्त्रो के अर्थ को तोड़-मरोड़कर जनता के मन में संदेह पैदा कर दिया।

## धार्मिक परिस्थितियाँ

भारत की प्राचीन संस्कृति वस्तुतः वैदिक धर्म गर ही आापारित थी , भारतवर्ष की प्राचीन जनता तैदिक धर्म की ही अनुयायी थी। सनातन धर्म की इस वैदिक संस्कृति में कर्मकाण्ठ और बिन्तन के माध्यम से ही दूरारे लोक के रहस्य को जानने और इस लोक के सुख को भोगने के पश्चात परलोक में भी गोक्ष पाने को परमार्थ गाना गया , परन्तु गानवीय मूल्यों की अत्यधिक उपेक्षा की गई। वैविक धर्म में बढ़ते कर्मकाण्डों तथा ब्राह्मणवाद के कारण महात्मा बुद्ध ने धर्म में करूणा और अहिंसा जावि गानवीय मूल्यों को गहत्व प्रदान किया परन्तु कुछ समय पश्चात् बौद्धधर्म में भी कर्मकाण्डों तथा अनेक प्रकार की गुह्य विधाओं का बोलबाला हो गया, तो अद्वेत बड़ा के नहरप को स्थापित किया गुरू शंकराचार्य ने उन्होंने कहा जीपन और जगत दोनों मिथ्या हैं, मानव मूल्यों की भूमिका ब्रहा और आत्मा के बीच मेल नहीं खाती है। विसंगति को गानव मूल्यों के क्षेत्र में भारतीय समाज ने कई शताब्दियों तक अपनाये रखा। इसी समयान्तराल में उत्तर भारत में इस्लामी परम्परा का वर्चस्व स्थापित होने लगा। इस्लामी परम्परा के जोश तथा खुंखार आक्रान्ताओं के सामने भारतीय समाज फा ठहरना असंभव हो गया , परन्तु इसी धार्मिक जोश के प्रबल आवेग के सामने दक्षिण भारत के भक्ति आन्दोलन जिसने विश्व रंजक तथा विश्व रक्षक आराध्य की स्थापना की तथा त्याग, सेवा, प्रेन और परोपकार आदि मूल्यों के स्थापित किया।

## शैक्षिक स्थिति

शिक्षा के क्षेत्र में भारत का अतीत अत्यन्त गौरवमय है। प्राचीन काल में रत्री और पुरुष दोनों शिक्षा प्राप्त करते थे। मध्यकाल में भी शिक्षा की स्थिति अच्छी बनी रही। यूरोगिय जातियों के आगमन के समय यहाँ शिक्षा के अनेक बेशी तरीके गौजूद थे। शिक्षा की व्यवस्था केवल देश के कुछ हिस्सों में ही नहीं थी अपितु यह सम्पूर्ण देश में विद्यमान थी। डॉ० एफडब्लयू० धोंगरा ने अपनी पुस्तक "म हिस्ट्री एण्ड प्रोस्पेक्टस ऑफ ब्रिटिश एज्यूकेशन इन इण्डिया" में लिखा है-"भारत में शिक्षा कोई गई बात नहीं है। संसार का कोई भी देश ऐसा नहीं है जहाँ ज्ञान पो प्रति प्रेग इतने प्राचीन काल से प्रारम्भ हुआ अथवा जिसने इतना स्थाई और शक्तिशाली प्रभाव उत्पन्न किया हो। मैवत्तमूलर ने अपनी पुस्तक "इण्डिया व्हॉट कैन इट टीच अस" में कहा है कि "अगर में विश्वभर में उस देश को ढूँढने के लिए चारों विशालों में आँखे उपकर देखू जिस पर प्रकृति देवी ने अपना सम्पूर्ण वैभव , पराक्रम तथा सौंदर्य खुले हाथो लूटाकर उसे पृथ्वी का स्वर्ग बना दिया है तो मेरी उँगली भारत की तरफ उठेगी।

मुसलमानों के आगमन के पश्चात् भारत में एक अस्थिर राजनैतिक वातावरण शुरू हुआ जिसने भारत की राजनैतिक तथा सामाजिक व्यवस्था को तो प्रभावित किया, शैक्षिक वातावरण पर भी उसका प्रतिकूल प्रभाव मड़ा।

जब भारत में मुस्लिम शासन स्थापित हुआ तो स्वाभाविक था कि वे लोग भारत में अपनी भाषा , संस्कृति तथा सभ्यता का प्रचार-प्रसार करते और उन्होंने ऐसा ही किया। इससे भारत में प्रचलित पुरातन वैदिक शिठा। को क्षति पहुँची , इन आक्रमणकारियों ने यहीं पर स्थित विश्वविद्यालय को नष्ट कर दिया तथा सम्पूर्ण भारतीय साहित्य को जला दिया।" (सरस्वती दयानन्द: ऋग्वेदाविभाष्यभूमिका, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली, 1991)

## निष्कर्ष

भारतीय इतिहास में 19वीं शताब्दी उल्लेखनीय मानी जा सकती ह। भारतीय संस्कृति अंधविश्वासों, पुराने रीति–रिवाजों और पक्षपात से भरी हुई थी। यह काफी हद तक थाय एक विघटित विरासत के साथ स्पष्ट रूप से जीवाश्म बन गया और शेष रहने के लिए कोई पत्थर नहीं बचा। सामाजिक और धार्मिक सुधार लाने के उद्देश्य से विभिन्न संगठन उभरे। आर्य समाज स्वामी दयानंद सरस्वती द्वारा शुरू किया गया एक ऐसा संगठन था। आर्य समाज को हरियाणा में जबरदस्त सफलता मिली। इससे इस क्षेत्र के लोगों को एक नया संदेश मिला. आर्य समाज कार्यकर्ता गांव–गांव जाकर भाषणों के माध्यम से आर्य समाज को लोकप्रिय बनाते थे। इसने बाल विवाह का विरोध किया और अंतरजातीय और पुनर्विवाह के पक्ष में था। विशेषकर हरियाणा में जाटों के बीच यह अधिक लोकप्रिय हो गया। इसने धर्म और समाज के क्षेत्र में कई सुधार लाए हैं।

## सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

### प्राथमिक स्रोत


1. सत्यार्थ प्रकाश, गोविन्द रामहासानन्द, दिल्ली 1975, स्वामी दयानन्द सरस्वती।
2. गो-करूण। निधि, वैदिक पुस्तकालय, अजमेर, 1976, स्वामी दयानन्द सरस्वती।
3. ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, वैदिक पुस्तकालय, अजमेर, वॉल्यूम 2, स्वामी दयानन्द सरस्वती।
4. यजुर्वेद नाष्य, दयानन्द संस्थान, नई दिल्ली, सं० 2030, स्वामी दयानन्द सरस्वती
5. अनुभ्रमोच्छेदन, वैदिक पुस्तकालय, अजमेर सं०-2040 वि०, स्वामी दयानन्द सरस्वती।
6. आर्याभिविनय, स्थागी दयानन्द सरस्वती
7. पूना-प्रदचन (उपदेश मंजरी) डॉ० भारतीय भवानीलाल, शैदिक मंत्रालय विभाग, अजमेर, 1976
8. आर्योद्देश्य रत्नमाला, वैदिक पुस्तकालय,अजमेर, 1977
9. गौतम अहिल्या की कथा, स्वामी दयानन्द सरस्वती।
10. पंचमहायज्ञविधि, स्वामी दयानन्द सरस्वती।
11. पोपलीला, स्वामी दयानन्द सरस्वती।
12. प्रतिमापूजन विचार, स्वामी दयानन्द सरस्वती।
13. अनोच्छेदन, स्वामी दयानन्द सरस्वती।
14. वेद-विरुद्ध मत-खण्डन, स्वामी दयानन्द सरस्वती।
15. बेदान्ति ध्वान्त निवारण, स्वामी दयानन्द सरस्वती।
16. व्यवहार गानु, आर्य साहित्य प्रचार ट्रस्ट, दिल्ली 1985
17. सहायक सचिव भारत की ओर से 22 जनवरी 1864 को अवध के मुख्य आयुक्त को लिखा पत्र सं०- 10 गृह विभाग , पब्लिक प्रोसिडिंग्स, 1864,


### द्वितीयक स्रोत


1. हिंदी पत्रकारिता के विविध आयाम, भाग-2. डा० वैदिक वेद प्रताप।
2. .द इकोनोमिक हिस्ट्री ऑफ इण्डिया, दत्त आर०सी० 1958, कलकता।
3. इण्डियन पॉलिटिक्स सिन्स द म्युटिनी, विनतामणी सीधाई, 1930

4. सोशल बैकग्राउण्ड ऑफ इण्डियन नेशनलिज्म, देसाई, ए०आर०, पोपुलर प्रकाशन, बम्बई, 1989
5. भारत में शिक्षा व्यवस्था का इतिहास, अग्रवाल जै०सी०, 2007, शिप्रा पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
6. आर्य समाज का इतिहास भाग-1. डा० विद्यालंकार, सत्थकेतु, आर्य स्वाध्याय केन्द्र, नई दिल्ली, 1938
7. भारतीय शिक्षा एवं उसकी समस्याएँ, जौहरी, बी०पी०, विनोद पुस्तक मंदिर,आगरा,1964
8. भारतीय शिक्षा व्यवस्था का विकास, यादव भीतु यूनिवर्सिटी पलिकेशन, नई दिल्ली, 2014
9. स्वतंत्रता संग्राम, चन्द्र विपन, त्रिपाठी अगलेश, हे वरूण, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, 2014
10. हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता, ४० कुनार अरुधेश, केके पब्लिकेशन, नई दिल्ली. 2004
11. सोनीपत जिला : एक पुरातात्विक अध्यन,अनिता, हरियाणा, 2022
12. हरियाणा स्टडीज इन हिस्ट्री एंड कल्चर,यादव, कृपाल चंद्र, के. यू. कुरूक्षेत्र, 1968
13. हरियाणा में 1857 का विद्रोह,यादव के.सी. मनोहर पब्लिशर्स, 1977
14. हरियाणा: एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य, मित्तल, सतीश चंद्रा, अटलांटिक पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, (1986)।
15. आधुनिक हरियाणाः इतिहास और संस्कृति, यादव केसी, मनोहर पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, (2002)
16. भारत का इतिहास, धर्म और संस्कृति, गजरानी, एस., खंड I, ज्ञान पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 2004
17. "इंडिया सिंस 1526" महाजन वीडी, एस.चंद एंड कंपनी, नई दिल्ली, (1958)।
18. हरियाणाः अतीत और वर्तमान, शर्मा, सुरेश के., मित्तल प्रकाशन, नई दिल्ली, (2006)
19. http:www.jatland.com/home/Growth_of the_Arya_Samaj
20. पंजाब का इतिहास और संस्कृति, सिंह, मोहिंदर, अटलांटिक प्रकाशक और वितरक, नई दिल्ली, (1988)